गुरु नानक - सबद ९१
मुकामु करि घरि बैसणा नित चलणै की धोख ॥
रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ६४

मुकामु करि घरि बैसणा नित चलणै की धोख ॥
मुकामु ता परु जाणीऐ जा रहै निहचलु लोक ॥१॥
दुनीआ कैसि मुकामे ॥
करि सिदकु करणी खरचु बाधहु लागि रहु नामे ॥१॥ रहाउ ॥
जोगी त आसणु करि बहै मुला बहै मुकामि ॥
पंडित वखाणहि पोथीआ सिध बहहि देव सथानि ॥२॥
सुर सिध गण गंधरब मुनि जन सेख पीर सलार ॥
दरि कूच कूचा करि गए अवरे भि चलणहार ॥३॥
सुलतान खान मलूक उमरे गए करि करि कूचु ॥
घड़ी मुहति कि चलणा दिल समझु तूँ भि पहूचु ॥४॥
सबदाह माहि वखाणीऐ विरला त बूझै कोइ ॥
नानकु वखाणै बेनती जलि थलि महीअलि सोइ ॥५॥
अलाहु अलखु अगंमु कादरु करणहारु करीमु ॥
सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एकु रहीमु ॥६॥
मुकामु तिस नो आखीऐ जिसु सिसि न होवी लेखु ॥
असमानु धरती चलसी मुकामु ओही एकु ॥७॥
दिन रवि चलै निसि ससि चलै तारिका लख पलोइ ॥
मुकामु ओही एकु है नानका सचु बुगोइ ॥८॥१७॥

सार: सब कुछ हमारे हाथों से निकल जाता है, यहाँ तक कि वह चीज़ें भी जो कभी पूरी तरह निश्चित लगती थीं। जीवन बसते हैं, नाम याद रखे जाते हैं, पद और प्रतिष्ठा का सम्मान होता है, पर अंततः सब धुंधला पड़ जाता है। जीवन निरंतर गतिमान है, पल निश्चितता का इंतज़ार नहीं करते, वह आते हैं और चले जाते हैं। इसलिए, समझदार लोग हमें सलाह देते हैं कि जो सच में महत्त्वपूर्ण है, उसे टालना नहीं चाहिए। अपनी व्यस्त दिनचर्या में हम अक्सर बाहरी दुनिया में

उलझ जाते हैं, सतह पर ध्यान देते हैं और उसके गहरे मतलब को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। हमें हर चीज़ को हमेशा के लिए पकड़कर नहीं रखना है, इसके बजाय, अगर हम चीज़ों के मौजूद रहते हुए समझ हासिल करते हैं तब स्पष्टता बढ़ती है और हम अपने मूल्यों से समझौता करना छोड़ देते हैं। बदलाव के समय में, अर्थ नियंत्रण से नहीं, बल्कि सजगता से गहरे होते हैं जिससे, भीतर हमारी अंतरात्मा अडिग रहती है। एक अच्छा जीवन उसी पल शुरू होता है जब हम उसे टालना छोड़ देते हैं।

मुकामु करि घरि बैसणा नित चलणै की धोख ॥
इस संसार को स्थायी मानकर हम इसे अपना घर समझ लेते हैं और इसे छोड़ने के भय में जीते रहते हैं। यह हमें अपनी अंतरात्मा को अपने हमेशा रहने वाले निवास के रूप में पोषित करने के लिए प्रेरित करता है जो हमें मौत के डर से आज़ाद करता है।

मुकामु ता परु जाणीऐ जा रहै निहचलु लोक ॥१॥
स्थायित्व की कल्पना तभी सार्थक है जब सृष्टि में कोई बदलाव न हो। यह स्मरण कराता है कि इस दुनिया में बदलाव, विकास और मृत्यु ही स्थायी हैं, शेष सब क्षणिक है। (१)

दुनीआ कैसि मुकामे ॥
यह संसार स्थायी कैसे हो सकता है? यह प्रश्न हमें जीवन के हमारे उद्देश्य पर गहन चिंतन करने के लिए आमंत्रित करता है।

करि सिदकु करणी खरचु बाधहु लागि रहु नामे ॥१॥ रहाउ ॥
विश्वसनीयता और अच्छे कर्मों को अपना सहारा बनाओ और लगातार ध्यान करने में स्वयं को समर्पित करने का संकल्प लो। यह ज़ोर देता है कि जो गुण हम अपने अंदर पोषित करते हैं वही सच्ची विरासत है जो समय के साथ बनी रहती है। (१)(विराम)

जोगी त आसणु करि बहै मुला बहै मुकामि ॥
योगी ध्यान की मुद्रा में बैठकर साधना करता है, मुल्ला स्थिर होकर इबादत करता है। यह धार्मिक प्रथाओं के अलग-अलग विविध रूपों को दर्शाता है।

पंडित वखाणहि पोथीआ सिध बहहि देव सथानि ॥२॥
विद्वान धर्मग्रंथों का अध्ययन करते हैं, जोगी पवित्र स्थानों पर जाते हैं। यह ज्ञान प्राप्त करने के विविध रास्तों का प्रतीक है। (२)

सुर सिध गण गंधरब मुनि जन सेख पीर सलार ॥
फ़रिश्ते, जोगी, दिव्य संगीतकार, ऋषि, मुनि, संत और नेता। ये सत्ता और ज्ञान की विभिन्न भूमिकाओं के प्रतीक हैं।

दरि कूच कूचा करि गए अवरे भि चलणहार ॥३॥
वह अपनी भूमिकाएँ पूरी करके विदा हो गए और दूसरे भी उनके पीछे चले जायेंगे। यह इस तथ्य को रेखांकित करता है कि मृत्यु सार्वभौमिक है, इसे अनदेखा करने से केवल आध्यात्मिक विकास में देरी होती है। (३)

सुलतान खान मलूक उमरे गए करि करि कूचु ॥
सुल्तान, शासक, सम्राट और कुलीन, अपने कर्तव्य निभाकर वह भी एक-एक कर चले गए। यह कल्पना दर्शाती है कि मृत्यु शक्तिशाली और निर्बल में भेद नहीं करती।

घड़ी मुहति कि चलणा दिल समझु तूँ भि पहूचु ॥४॥
एक-दो पल में हम भी चले जाएंगे। हे मन, तुम्हें यह समझना होगा। यह एहसास बताता है कि विवेकपूर्ण जीवन का अर्थ है नश्वरता को अपनाना। (४)

सबदाह माहि वखाणीऐ विरला त बूझै कोइ ॥
आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि इसे स्पष्ट करती है फिर भी बहुत कम लोग ही इस सच को समझ पाते हैं। यह इंगित करता है कि सत्य के सार को समझने के लिए ज्ञान को ईमानदारी से पोषित करना आवश्यक है।

नानकु वखाणै बेनती जलि थलि महीअलि सोइ ॥५॥
नानक यह पहचान कर अपनी भक्ति व्यक्त करते हैं कि सर्वव्यापी ऊर्जा जल, भूमि और आकाश में व्याप्त है। यह प्रकाश डालता है कि हमारी चेतना सार्वभौमिक ऊर्जा का हिस्सा है जिसका अर्थ है कि वह सदा रहती है। (५)

अलाहु अलखु अगंमु कादरु करणहारु करीमु ॥
वह सर्वव्यापी, अदृश्य और अगम्य स्रोत निर्माता, पालनकर्ता और परोपकारी चेतना है।

सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एकु रहीमु ॥६॥
दुनिया की सभी चीजें आती-जाती रहती हैं, केवल एक, सर्वव्यापी चेतना ही स्थिर रहती है। यह प्रकाश डालता है कि सभी परिवर्तनों के बीच, केवल सार्वभौमिक चेतना ही अंतिम सत्य के रूप में खड़ी रहती है। (६)

मुकामु तिस नो आखीऐ जिसु सिसि न होवी लेखु ॥
स्थायित्व की अवधारणा उस व्यक्ति पर लागू होती है जिसके माथे पर भाग्य का कोई निशान न हो। यह भाग्य, अहंकार और लगाव के बोझ से मुक्त स्थायी विचारों का प्रतीक है।

असमानु धरती चलसी मुकामु ओही एकु ॥७॥
आकाश और पृथ्वी भी मिट जाएँगे, केवल वही एक सर्वव्यापी चेतना ही स्थायी रूप से रहेगी। यह इस विचार की पुष्टी करता है कि सजगता पर केंद्रित हमारा ध्यान सदैव से अनन्त है। (७)

दिन रवि चलै निसि ससि चलै तारिका लख पलोइ ॥
दिन में सूरज चलता है, रात में चंद्रमा रहता है और अनगिनत तारे आकाश में बिखर जाते हैं। पूरा ब्रह्मांड समय की लेय के साथ नाचता है। सभी रूप परिवर्तन में भाग लेते हैं। प्रकृति हमें याद दिलाती है कि सब कुछ बीत जाता है।

मुकामु ओही एकु है नानका सचु बुगोइ ॥८॥१७॥

नानक कहते हैं, एक ही स्थायी पहलू है जो सत्य को व्यक्त करता है। यह समझ हमें यह पहचानने में मदद करती है कि हमारी सच्चाई को हमारे सामने पेश करने में हमारी अंतरात्मा ही एकमात्र स्थिर वस्तु है। (८)(१७)

तत्त्व: गुरु नानक बताते हैं कि विकास की सुंदरता हमारे क्रमिक बदलाव में ही निहित है जो आत्म-खोज की हमारी यात्रा के ताने-बाने में जटिल रूप से बुना हुआ है। हम सुख-दुःख, दैनिक चुनावों और विश्वास-मूल्य-पहचान के बदलते परिदृश्य के माध्यम से विकसित होते हैं। फिर भी, इन परिवर्तनों के बीच, हमारी अंतरात्मा ही वह अटूट स्थिर तत्व बनी रहती है जो हमारी वास्तविकता को आकार देती है। परिवर्तन को अपनाकर और इस आंतरिक मार्गदर्शक से जुड़कर हम मानव होने की गहन समृद्धि को पहचानते हैं, अपने भौतिक रूपों की नश्वरता और सार्वभौमिक चेतना के अनंत कालातीत सार को पूरी तरह से समझते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com